P-1	R.M.M. Law College - Saharsa.
	Manvendra Mandal / Subject - Hindu Marriage Act
	Parttime Lecturer / Part - Ist.

जैन धर्म में विवाह की पद्धति (धारा-7, खण्ड-4)

जैन धर्म में विवाह पद्धति का जहाँ तक प्रश्न है, जैन धर्म में विवाह पद्धति का स्वरूप हिन्दू विवाह पद्धति से भिन्न नहीं है न ही उनके धार्मिक आचार-विचार हिन्दू स्थापित परम्पराओं से अलग है। यद्यपि जैन धर्म में विवाह के लिए कुछ अनुष्ठानों का हिन्दू धर्म की भाँति किया जाना आवश्यक नहीं है तथापि विवाह का मूल अवधारणा हिन्दू विवाह संस्कारों से ही आच्छादित और अनुप्राणित होती है। अतः हिन्दू विवाह अधिनियम जैन सम्प्रदायों के अनुयायियों पर भी लागू होता है और जैन धर्मावलंबियों का वैवाहिक जीवन हिन्दू धर्म व आचारों-विचारों से विनियमित होता है। यद्यपि धर्म के रूप में जैन समुदाय स्वयं को पृथक मानता है। इस सम्प्रदाय के प्रणेता भगवान महावीर थे।

जैन धर्म के मानने वालों में वर-वधू के विवाह अनुष्ठान के लिए भी सप्तपदी की रस्म आवश्यक है। इस सप्तपदी की रस्म पूरी करने के लिए वेदी या मंत्र या जिनवाणी हवनकुण्ड के पास रखी जाती है और पंचपरमेष्ठि का पूजन होता है और उनको नमस्कार किया जाता है।

प्रथमतः श्री अरिहन्त भगवान को नमस्कार (तीर्थंकर)

श्री सिद्ध भगवान को नमस्कार (मुक्तात्मा)

श्री आचार्य महाराज को नमस्कार (गणधीश)

श्री उपाध्याय जी को नमस्कार (वाचक)

अढ़ाई द्वीपों में वर्तमान सामान्य एवं साधु मुनिराजों को नमस्कार। उक्त पाँच परमेष्ठियों को जो नमस्कार किया जाता है वह सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला और सब प्रकार के लौकिक व लोकोत्तर मंगलों में प्रधान तथा प्रथम मंगल है। इस तरह जैन धर्म में भी सप्तपदी की रस्म विवाह के अनुष्ठान के लिए मुख्य एवं आवश्यक है।

Scanned with CamScanner